

[श्री रामदास अठावले]

लोक सभा में माँग कि थी कि दलित, आदिवासी और ओबीसी को जिस तरह आरक्षण मिलता है, उसी तरह ब्राह्मण, मराठा, राजपूत, क्रिश्चियन, लिंगायत आदि समाज में जो इकोनॉमिक रूप से बैकवर्ड क्लास के लोग हैं, उनको भी मंडल कमीशन के मुताबिक आरक्षण मिलना चाहिए। हमें इस झगड़े को खत्म करना चाहिए। गुर्जर को भी आरक्षण मिलना चाहिए, जाट को भी मिलना चाहिए, मराठा को भी मिलना चाहिए। मेरा कहना यह है कि मेरा विषय एट्रोसिटीज़ का है। ...**(समय की घंटी)**....

श्री उपसभापति : आपका समय समाप्त हो गया। ...**(व्यवधान)**... ओके, आपका टाइम ओवर हो गया। त्यागी जी, आप बोलिए। ...**(व्यवधान)**... अठावले जी आप, बैठिए। आपका टाइम खत्म हो गया। त्यागी जी, आप बोलिए।

Recent Attack on Palestine by Israeli Army

श्री के. सी. त्यागी (बिहार) : सर, पिछले एक सप्ताह में लगातार निर्दोष फिलिस्तिनियों पर अत्याचार हो रहे हैं। यह बहुत पुरानी समस्या है, अगर मैं उसके विस्तार में जाऊँगा, तो आप समय भी नहीं देंगे। उनकी तीन पीढ़ियाँ तम्बुओं में पैदा हुई हैं। अमेरिका इजरायल को इकोनॉमिकली और मिलिट्रीवाइज़ सपोर्ट करने के लिए 8 मिलियन डॉलर पर डे खर्च करता है। भारत के पहले प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू और नासिर साहब ने मिल कर गुटनिरपेक्ष देशों की कल्पना की थी और उसे अस्तित्व में लाए थे, जिसे बाद में श्रीमती इंदिरा गांधी और यासर अराफात ने मिल कर पश्चिम एशिया से लेकर पूरी दुनिया में फैलाया था। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के प्रधान मंत्रित्व काल में भी कई मौकों पर उन्होंने फिलिस्तिनियों की मदद की थी। यह पहला अवसर है, बाजारवाद का असर है और अमेरिकी* का असर है कि दुनिया का कोई भी मुल्क उन निहत्थे लोगों के ऊपर हो रहे अत्याचार पर बोलने के लिए तैयार नहीं है। मेरे पास समाचार पत्र की एक कटिंग है, जिसमें से मैं एक लाइन पढ़ कर सुनाने की इजाजत चाहता हूँ। इसमें लिखा है, 'The mother of a four year old Palestinian girl killed in an Israeli air attack.' एक चार साल की बच्ची रमज़ान के मुकद्दस महीने में, जिसको अगली ईद का इंतजार था, जिसके माँ-बाप उसकी बहबूदी के लिए दुआएँ करते, वह चार साल की बच्ची भी इजरायल के अटैक में मरी है। इस पर पूरी दुनिया खामोश है। भारत ऐसी तमाम तहजीबों का और इस तरह की तमाम चीजों का समर्थन करता रहा है। यह हमारा सिद्धांत रहा है कि हम तमाम ब्रह्मांड के लोगों का ध्यान रखते हैं। अच्छा होता है कि हमारी काबिल विदेश मंत्री यहाँ होतीं, लेकिन मुझे अफसोस है कि विदेश मंत्री ने भी अब तक इस विषय में कोई चिन्ता व्यक्त नहीं की है। मून साहब, जो यूनाइटेड नेशंस के सेक्रेटरी जनरल हैं, उनका कल का रिज़ोलुशन मेरे पास है। शायद आज सिक्योरिटी काउंसिल की मीटिंग भी हो सकती है, जिसमें यह प्रस्ताव आए, लेकिन मुझे यह अफसोस है कि क्या कारण है कि भारत सरकार ने अब तक इस पर रिएक्ट नहीं किया। यह बात मैं अपनी बाई बाजू के मित्रों के लिए इलज़ाम के तौर पर नहीं कहना चाहता, न ही मैं सारी पार्टी के लिए यह कह रहा हूँ, लेकिन कुछ ऐसे लोग हैं, जिनकी इज़राइल के साथ भी हमदर्दी रहती है। मैं चाहता हूँ कि कम-से-कम इस सदन में इस तरह का प्रस्ताव पास होना चाहिए कि इस समय फिलिस्तीन और इजरायल के लोगों में जो झगड़ा चल रहा है,....**(समय की घंटी)**... उसको समाप्त करने के लिए और 7 लाख के करीब जो रिफ्यूजी हैं, जो पिछली तीन पीढ़ियों से टेंटों में

*Expunged as ordered by the Chair.

रह रहे हैं, उनकी वापसी के लिए भारत यूएनओ में फिलिस्तीनियों के पक्ष में पैरवी करेगा। धन्यवाद।

श्री प्रमोद तिवारी (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं इनके उल्लेख का समर्थन करता हूँ।

SHRI M.P. ACHUTHAN (Kerala): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI P. RAJEEVE (Kerala): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI JAIRAM RAMESH (Andhra Pradesh): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Almost the entire House associates. Now, Shri K.N. Balagopal.

Bringing back Indians Trapped in Iraq

SHRI K.N. BALAGOPAL (Kerala): Sir, I wish to raise a very serious issue here. It is about the very serious situation prevailing in Iraq.

Sir, I think this should have been discussed in this House earlier after a statement by the Minister. A discussion is actually needed in this House. Hence, I would first request the Government to initiate a discussion on the Iraq issue. An immediate intervention by the Government is needed. Now, Iraq is divided into three parts and ISIS is controlling a major part of the region. There are terrorist attacks taking place over there. And India is concerned socially, politically, economically and there are various aspects to it. But the immediate concern is the plight of the Indians there.

Sir, I wish to congratulate the Government for taking the initiative and bringing back home some of the Indians, especially some nurses working in Mosul. There are Indians who have been brought back, but they are only few in number considering the total number of Indians working there. India sent a Boeing 777 Airbus and brought them back from the Erbil Airport, not Mosul. So, transporting is a problem. Forty-six nurses from Kerala came back on the first flight. A lot of people are still trapped there. There are a lot of people working in the health sector there, mainly nurses. Also, there are office workers who are working in different enterprises. Mainly, they are Indian labourers working there. They went to Iraq through some other channels too; some Indian labourers had gone to Iraq from neighbouring countries. The unfortunate part is that we don't have the records. We don't know the actual position. The Government may make a statement, but I fear that India does